डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

साकेत (मैथिलीशरण गुप्त

प्रश्न: 'साकेत' के आधार पर राम का चरित्र-चित्रण करें।
उत्तर: 'साकेत' मैथिलीशरण गुप्त का एक लोकप्रिय महाकाव्य है। इस काव्य के द्वारा उन्होंने उर्मिला के उपेक्षित जीवन को साहित्य के धरातल पर उतारने की कोशिश की है। किंतु इस काव्य का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है वह है राम का चरित्र। मैथिलीशरण गुप्त ने स्वयं कहा है —

"राम तुम्हारा जीवन स्वयं काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।"

साकेत का राम एक ऐसा आदर्श चरित्र है जिसमें नरत्व भी है नारायणत्व भी है। वाल्मिकि के राम पुरुषोत्तम हैं और तुलसी के राम नारायण। किन्तु साकेत के राम में राम में उन दोनों गुणों का समावेश है। यह गुप्त जी की बुद्धि और भावना का संयोग है। गुप्त जी के राम मानत्व पर मुग्ध हैं, इसलिए युग के अनुरूप उन्होंने राम के चरित्र को गढ़ा है जो समकालीन परिस्थितियों में सही और फिट बैठे। आज का बुद्धिवादी मानव अलौकिकता में विश्वास नहीं करता, इसलिए गुप्त जी ने 'साकेत' में राम के चरित्र को अत्यधिक मानवीय बनाया। यह सर्व विदित है कि गुप्त जी एक वैष्णव भक्त थे इसलिए उनकी वैष्णवी भावना राम को ईश्वरत्व से नहीं हटा सकी। परिवारगत संस्कार जो उन्हें प्राप्त हुए थे उसमें गुप्त जी ने राम को ईश्वर के ही रूप में देखा था, यही भावना राम को ईश्वरत्व प्रदान कर गयी।

डा. कमलाकांत के अनुसार — "कवि ने विश्वास के आधार पर राम को ईश्वर मान लिया पर बुद्धिवाद के कारण उन्होंने राम को मानव रूप की रक्षा की है। राम शील, शक्ति और सौंदर्य से युक्त हैं। धर्म संस्थापना उनका कार्य है और लोक कल्याण उनका उद्देश्य। राम के चरित्र में लोक-नायक की भावना सर्वोपरि है। राम वीर, धीर और गंभीर हैं, पर वे मानव हैं। मानवता उनका आदर्श है, त्याग और तपस्या उनके जीवन के उत्कृष्ट काव्य हैं। इसी आधार कवि ने राम के स्वरूप की कल्पना की है।"

'साकेत' में राम को जो चरित्र उभरकर आया है वह आर्यों को आदर्श नागरिक बनाने आए हैं, सुदृढ़ शांति ही उनके जीवन का मूलमंत्र है। वे दुष्टों का विनाश

P. T. O

करते हैं और लोगों का कल्याण करते हैं। उनका उद्देश्य राज भोग नहीं बल्कि धर्म की रक्षा है। वह धर्म के लिए दस्युओं को परास्त करने जाते हैं, रावण के वध के पीछे भी उनका यही उद्देश्य है। चाहे कितनी भी विपत्तियाँ आ जाए राम अपने धर्म से च्युत नहीं होते। वे सुख-दुख में समभाव रहते हैं। इसलिए राजा दशरथ ने उन्हें राज्य से भी भारी माना। चित्रकूट प्रसंग में भी राम दृढ़ रहते हैं। भरत, कैकेयी, कौशिल्या सभी उन्हें लौट चलने का आग्रह करते हैं, पर वे दृढ़ रहते हैं, उनके भाव समान रहते हैं। यहाँ तक कि अपना अहित करने वाली कैकेयी के प्रति भी वह सहिष्णु रहते हैं। यही कारण है कि उनका पश्चाताप सुनकर वह धन्य-धन्य हो जाते हैं।

इस प्रकार राम का चरित्र एक उदात्त नायक का है। वह अखिलेश, लोकेश और सर्वेश्वर हैं। सृष्टि के सारे कार्य उन्हीं के द्वारा हो रहे हैं। राम मायामय होने के कारण जीवन, जड़ और प्रकृति सब में समाहित हैं। वह तो केवल भू-भार हरने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं वे खुद कहते हैं—

'अवतरित हुआ मैं आप उच्च फल जैसा।
आकर्षण पूर्ण भूमि का ऐसा॥"

इसके विपरीत राम में नरत्व का समावेश भी खूब हुआ है। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी पहले मानव हैं। इसलिए उनमें मानवोचित गुण कूट-कूट कर भरे हैं। वह गतिशील, भावुक और संवेदनशील हैं। इसलिए कवि ने उनके चरित्र से अलौकिक घटनाएँ निकाल दी हैं। उनके चरित्र में अगाध करुणा है, इसलिए लक्ष्मण और उर्मिला के प्रति भी उतने ही भावुक हैं जितना कैकेयी और भरत के प्रति।

यद्यपि राम के चरित्र में दनुजत्व का अभाव है फिर भी, कहीं-कहीं उनमें भावुकता की मात्रा अधिक दिखती है। लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने पर जिस प्रकार वह विलाप करते हैं वह एक साधारण मनुष्य के लक्षण हैं। वन में भी उनकी मोह भावना प्रबल हो उठती है, वह लक्ष्मण से कहते हैं—

आता है जी में तात यही
पीछे पिघले व्यवधान कहीं
झट लौट चलूँ मैं आकर!

इस प्रकार राम का चरित्र एक अवतार से ऊपर उठकर मानवीय अधिक बन जाता है। डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार— "साकेत में राम मानवता को साकार मूर्ति हैं। वह उच्च कोटि के मानव हैं। यहाँ हम रामचरित मानस की भाँति 'विधि हरि-शम्भु

(3)

भगवान हरि' के रूप में नहीं देख सकते, अपितु जगत में धर्म की स्थापना हेतु एवं मर्यादा का पालन करने हेतु अवतीर्ण हुए पुरुषोत्तम राम के रूप में देख सकते हैं।

इस प्रकार साकेत में राम का स्वरूप एक आदर्श मानव, एक आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई और एक आदर्श पति के रूप में चित्रित हुआ है। यद्यपि उनमें ईश्वरत्व के गुण विद्यमान हैं फिर भी, उनमें मानवता की प्रधानता है। तुलसी के राम जहाँ ब्रह्म के अवतार हैं, वहीं साकेत के राम में नरत्व पर बल दिया गया है। साकेत के राम ईश्वर होते हुए भी मानव हैं। यही कारण है कि कवि ने राम के चरित्र से अलौकिक घटनाओं को निकाल दिया है। उन्होंने राम को पूर्णतः मानवत्व का रूप प्रदान किया है।

P.G. III semester

CC – X

'Saket Ka Ram'